

## ॥ सकारादि श्रीसीतासहसूनाम-स्तोटाम्

## [ श्रीरुव्रयामल--तन्त्रीक्तम् ]

सुराक्तये प्रभाने तु वेतवेदं महेश्वरम् । शैक्षाधियस्थतनथा सङ्गे इरमुदान्य ह ॥१॥ भी रेज्युवान्य

परमेश परंवास-प्रधानपुरुपेश्वर । नामनां सहस्रं सीवायाः विस्तरात् वद राह्नर ! ॥२॥

श्री नहादेव ववाणः—
श्री दिवि प्रवक्तामि नाममध्येसहस्रकम् । परंथामप्रदाविद्या चतुर्वनिक्षप्रदा ॥३॥
ग्राह्मात् देवि । सर्वसिद्धवैकवन्दिता । धतिग्रुद्धतराविद्या सर्वतन्त्रेषु वेदिता ॥१॥
विशेषतः कित्रुपे महासिद्धवैधदायिनी । गोपनीया प्रयत्नेन करमैचिकप्रकाशयेत् ॥१॥
विशेषतः कित्रुपे महासिद्धवैधदायिनी । गोपनीया प्रयत्नेन करमैचिकप्रकाशयेत् ॥१॥
विशेषतः कित्रुपे महासिद्धवैधदायिनी । गोपनीया प्रयत्नेन करमैचिकप्रकाशयेत् ॥१॥
विशेषतः विनाद्द्यां च्यापोहिति । एतिप्रशानमात्रेष् सर्वसिद्धीश्वरोभवेत् ॥॥
विशेषतः सत्यं स्वशोनिति सुत्रते । रोधिनीविष्मसंघानां मोहिनीपरपोपिताम् ॥॥
स्विधिनी राजसैन्यानां वादिनी परवादिनाम् । कलौ पापसमाकीर्यो पटनान्मुक्तकिन्तिवा ॥६॥
वस्मान्तं पद देवेशि । स्वर्गभोक्षद्रयाकम् । न्यासिनद्या प्रवद्यामि श्रुद्ध पर्वसनन्दिनी ॥१०॥

देव तोक में सर्व केंद्र कैनारा में देव देव महादेव शक्करणी से श्री पार्वती जी ने प्रेम पूर्वक पूड़ा--हे प्रधान पुरुषों में सर्वोत्तन मनो ! भाज तो जाप श्री सीता जी के सहस्रताम विस्तार पूर्वक सुनाने की कृषा करें। श्री महादेव जी ने कहा:---

दे देखि ! श्री जातको श्री के अनन्तानस्त नामों में से केवल एक हुनार नाम में सात पुनाता हूं। यह अर्थ-भर्म-काम-श्रीश केने वाली परा विद्या है, यह प्रशु का परम थाने भी जवान करती हैं। गुस्त से भी महागुस्त धर्म सिद्धियों से बन्दनीन भरवन्त गोपनीय वन्त्री हारा बात होने वाली महा विद्या है। विद्रोध कर कलिकाल में सम्पूर्ण गहा बिद्धियों को प्रहान करने वाली है। अटः किस किसी को नदी कहनी आहिये। गुस्त ही रचनी आहिये। विश्व वाली है। अटः किस किसी को नदी कहनी आहिये। गुस्त ही रचनी आहिये। विश्व वाल के-विना पूर्वा के-दिना होन के-विना जप के-विना पुर्वा वालय विना यह के वान विज्ञा के केवल एक बार अदा विश्वास से पाठ करने माद्र से ही बद्ध हस्थाविक महाच वालों से खुटकारा वे देती है। इसके जानने से ही मनुष्य सर्व सिद्धियों का सक्षाद बन जाता है। अतः जपने गुस्त वक्त की भावि है सुन्दर पुरा बाली पार्थती ! इसको ख़िया कर ही रचनी है। वस की भावि है सुन्दर पुरा बाली पार्थती ! इसको ख़िया कर ही रचनी

बाहिरे। वह सभी विष्नों को रोकते वाली है, रिक्यों को मोहित करने वाली है, राजा की होताओं का रवंभन करने वाली है तथा दिवाद में प्रतिवाशी को परास्त करने वाली है। वारों है भरे हुए किंगुम में पाठ करने मात्र से पावन करने वाली है। क्षतएव है देवि! क्यमें हथा बीच कत प्रदायक इस भी सीतासहस्रताम का पाठ हुम अवश्य करो। है पार्वति! इसको जात विश्व का मैं वर्णन करता है सो तुम मुनों ( बलोक है है।)

धस्मग्रहस्तानस्य क्षित्रं का प्रकीर्तितः । छन्दोऽनुस्तुष् घोक्तथ सीतादेश प्रकीर्तिता ॥११॥ स्रोतं रीजमारूपार्व कमलाशक्तिरीरिता । कीलकं पाश्रवीजेन विनियोगस्तवः परम् ॥१२॥ स्रवचानं प्रवस्त्वामि सीतायाः परमाव्युत्तम् । सर्वपापहरं दिव्यं सर्वकामफलप्रदम् ॥१२॥ बाद्यः कीर्तिकरंपुत्रयं सर्वायौच विनाशनम् । मात्वा सम्पक् विधानेन न्यासजालंसमाचरेत्॥१४॥

भस्य श्रीसीतासइसनाममन्त्रस्य बक्षाऋषिः मनुष्टुप् छन्दः श्रीसीतादेवतायैनमः!
 ह्र्यं ह्र्यं क्षी बीजाय नमः श्रींशक्तये नमः भा कीलकाय नमः यमसकलाभीष्टसिद्ययें जवे विनियोगः। अध्यानम्—

इस औं सीतासहस्रमाम के महा ऋषि है, अनुस्तुष् सन्द है। श्री क्षीता देवता है, हों— ही-क्सी कीज है, कमला शक्ति है, वां कीलक है सभीए मनोरथ की पूर्ति तथा श्रीसीताशी की करा शक्ति इसका विनियोग है। इसी से ऋष्यादि स्थास करके "श्रीसीताब स्थाहा" इस मूख करज से काजुन्यास—करन्यासादिक करना चाहिये। अब इब श्रीसीताशी का परम अद्भुत तथे पार नाशक—भायु-कीतिं तथा पुष्य प्रधंक—सर्व किस्त विभागक—भक्त की सभी कामनायें पूछ करने दाला भ्यान वर्शन करते हैं ( शत्तोक ११ से १४ )

ष्यावेज्ज्ञानकी रम्यां मुक्ताहार बुशोमिताम् । ष्रमन्तरत्नर विता तिहासन विराजिताम् ॥१५॥ व्यव्यक्ष्महसार्थाः दाढिमीकुसुमप्रभाम् । सुवृत्तनिविडीस्तुक्षः कृष्यग्यदलराजिताम् ॥१६॥ पन्यां मौक्तिकस्कार हारमारविराजिताम् । नवरत्नप्रमाराजि पैथेयवर भूषणाम् ॥१७॥ पृतिकृत्यामनोरम्यां सुगग्रहस्यल भूषणाम् । नवामि परमां देशी रामवामाङ्गगां शिवाम् ॥१०॥

नुष्णकार से दुशोसित, जलन्त रशों से जने हुए मिहासन पर विराजमान-उर्ज होने शर्व हरारों सूनों के समान प्रकाशित-जनार के फूल के समान अका प्रभा साली-सुन्दर बद्ध स्वा से प्रशोधित-वहुमुश्व मिए मुक्तामों के हार धारण किये हुए-नर रश्नों की प्रभा से प्रमान वर्ष मिए मुक्तामों के हार धारण किये हुए-नर रश्नों की प्रभा से प्रमान वर्ष मिए मुक्तामों के हार धारण किये हुए-नर रश्नों की प्रभा से प्रमान वर्ष में स्वान कर मुख्य गाने में पहने हुए-मनोहर कार्यक्रमान भी आवकी की का ध्वान करके में व्यान करता है। इस प्रकार का ध्वान कर हर्ष में ही मानशिक पूना के उत्पारों से उसके में पराने का पूजन करके मक्तान इस स्थोप का पाठ करें। तस्परवान करके सक्तान इस स्थोप का पाठ करें। तस्परवान करके एक प्रमान करके सक्तान इस स्थोप का पाठ करें। तस्परवान करके पराने का प्रमान करके सक्तान इस स्थोप का पाठ करें। तस्परवान क्राक्ता है। इस प्रमान करके सक्तान इस स्थोप का पाठ करें। तस्परवान क्राक्ता है। इस प्रमान करके सक्तान इस स्थोप का पाठ करें। तस्परवान क्राक्ता है। इस प्रमान करके सक्तान इस स्थोप का पाठ करें। तस्परवान क्राक्ता है।

इति ध्वास्त्रा हृयु वचारे स्थान्युज्य स्तोत्रकं पठेत् । ॐसीता सीमन्तिनी सीमा सन्मन्त्रकत् राष्ट्रि सस्या सस्यवती सामा सान्तिकी सर्वमञ्जला । संस्त्रभाषा मसीमाध्वी मरकला मक्लेल्या संपत्ता समदा सान्द्रा सान्द्रनीलसमध्यमा । सीमाम्यजननी सेव्या सीम्या सुन्द्रस्त्रीयकी संभ्रमासीता सन्दुष्टफलदायिनी । सर्वोत्तुक्रकला सर्वा सर्वेद्या सक्रमायका शास्तिविया शास्तिमती सीमन्तमिय्युपण्। सावित्री सन्मुखी सिद्धा शास्त्रा प समत्रवा स्ततन्त्रा सत्वसङ्कत्वा समद्शिकत्रवदा । सारकसव्दशा स्थामा सरसा स्रीगोलका समाना सामगा शुद्रा समस्तसुर सम्मुखी। सर्वसम्बरश्रदात्री च शमदा मिन्धुसैविनो सरसीरुड् मध्यस्था सरोपर विद्वारिग्री । सरस्वती सुवक्किश्री श्रीजया शुभदायिनी वर्वमाङ्गर्यजननी सार्वभीम प्रदायिनी । सामाज्यकारियाी साम्राज्यकतदायिनी । सस्यवता सत्यपरा सद्भावा सर्वरायम्। सन्धार्यकर्वी सम्मान्या सम्मानसुखदाविनी सत्यङ्गानप्रदात्री च सुमनाराध्यपादुका । स्वर्णकान्ति समप्रख्या स्वर्णाभरण् भृषिता सत्सङ्कल्पप्रदा सञ्या सुसी सौस्यवरत्रदा । तंसारसागरारूढ संसारमय नाशिनी सर्वार्थसाधिनी सर्वा शर्वाक्षी शङ्कर त्रिया । शास्त्रतस्थानफलदा शासना शासनत्रिया। सारस्थव फलप्रदा । विजानमणिमञ्जीरा सस्मिताऽधरपरुलवा। सर्वभीन्दर्थनिखया सर्वभौभाग्यशालिनी । सञ्जनानन्द निलया सत्कर्भ फलदापिनी। बदमा ब्र्समगतिस्स्तुत्या ब्र्सम्बानप्रदायिको । सौदामिनी सुधादेवी सिन्धुरूपा च साम्बिका । मिद्रिपदा सिद्धिशन्यु सिद्धेशी सिद्धसुन्दरी । सन्ध्येयत्री सन्ध्यजरा सन्ध्या तारुग्यलालिता । समदा शाक्करी सेंतु सुकोला सरतीरहा । सोमेश्वरी सोमकला सोमपान सुतम्बता । सीम्यानना सीम्यरूपा सोमस्या सामसुन्द्री । स्वीप्रभा स्वीमुखी स्टर्यजा स्ट्येसुन्द्री स्टर्वकोटि प्रतीकाशा स्वीतजोम्पी सती। सोमकोटि प्रभा शोभा साममग्रहलवासिनी। शतानन्दा भृतिधरा मुणुम्ना शोभनप्रिया । शोभावती सुशोभाड्या शोभना सुमगा सुला शताची राम्बरध्वंसी सहस्राकी सहरेदरी । सहस्रशीर्पा सर्वेशी सहस्रपदसंयुवा सहस्राची सुरस्त्राह्या महस्रद्धजयस्तिका । शुभवस्त्रप्रिया सुन्दा शत्रुष्नीशंतनुत्रिया च शारी सहस्रवद्पक्का । शिशुपाद्यनिलया शम्बरारि भान्तिहा सन्वतिः सत्या सन्वानफलदायिती । श्रीकाररूपिग्री भद्रा भेगदा भमनासिनी श्रष्टा खेष्टकरी खेवा खुतिरूपा खुतिप्रिया। अंग्रोपित समाराध्या सुखुवान विवहरी

स्यास्त्रपति स्थितिकरा स्थितिस्था स्थितिपर्दिनी । अज्ञायती च अमदा अद्वा मस्तिममन्यिता ॥ होविया वोडशी बोडा पोडान्यासफलप्रदा । शुक्लाम्यरपरीधाना शुक्तगन्धासुकेयना ॥ तुक्तपुष्यिया शुक्ला शुक्लाभरणभूषिता । स्वयंज्योति। स्वयंकश्री स्वयमानं-द्विवहा ॥ होबादिशाधिनी होया श्रीधरार्चितपादुका । संकर्पमधिया सन्या समाध्यदलवामिनी ॥ सर्वेत्वा-सर्वेतिः-सर्वसासी-समुखता । संग्रामकारियी-विदा-सरपूरीरकातिनी ॥ सर्वाह्मण कुलोत्वन्ना-सञ्ज्ञानम्बरूपियो । सुगमा-सुगमत्रीता-सुगमञ्जानतत्परा ॥ होत्रपानरता-सोमा-शाम्भवी-शम्भुवत्सभा । समया-समयाकारा-संवितानवरावत्या ॥ हनातनविया-गुरा-गुरश्रेसोविराजिता । श्रुतिस्मृतिप्रवात्रीय-श्रवसी-शावसात्रिया ॥ हतपत्रविद्या-स्टीरा-सामन्तकुसुमार्चिता । सुबोधा-सुमतिः हवेशहा-नुहेशवरवायितो ।॥ सङ्गीतगानरसिका - सदास्वरविराज्ञिता । सरितमज्ञानफलदा - सदासन्तोपकारिको ॥ सामवेदकुतोत्सङ्गा-सामगानिवकुरी । धीभौध्यावसमाराध्या - स्वेच्छाविभवदायिनी ॥ स्वच्छादाचारानिलया—स्वेंब्टा-स्वेष्टकतप्रवा । स्वच्छन्दा-सानुक्यस्वा-साम्याधिकवरप्रवा ॥ शकम्भरो−शिवाराच्या-सिहाचलनिवासिनी / शिवज्यु ते⊤ितवा दूरयाःसिवञ्यान स्रायण्या सम्यादनविया सम्या-सम्पूर्णकतवायिनी । शंख स्त्राशिनी शङ्करपना-शङ्कपनासभी ॥ मह्निनो-सङ्घातलया–सङ्ख्यालायतो-समी । सम्बरी साम्बरी-सम्बुकी-सबरासिनी ॥ शक्वी-शक्कवती-शक्का-श्यामाञ्ज्ञी-श्याममोचता । रमशानस्था-श्मशाना च श्मसातस्थल जूबसा॥ तिवदाऽशिवहत्त्री च शकुनी-शङ्कशेखरा । सुमुखी-शोबिणी-शोबी-मौरी सीम्या सरासरी ॥ संपहा ज्ञापहा शम्या सम्पत्- सम्पक्तिवाधिनी । शृंगिश्ी-शृङ्गोकलभुक् शान्तिनी कञ्जूरविधाः। मका-संकापहासंस्था-प्राप्थत। शीतला-शिवा। शिवस्था-शिवधुम् प्राप्ती-शिवाकरा शिवोवरी॥ गाविनी-सबनी-सिसा-सियुप्-शियुवाधिनी। सबकुण्डलिनी-भारता-सीकरो-गानिस-सना॥ शिवकाश्ची शिवश्चीका शिवमाला —शिकाकृति । सम्यातिः संकुवसितः सन्तेनुः सीलदाधिनी ।। सिन्धुः स्वेरणतिः सँध्री सुन्दरी सुन्दरानना । साधुः सिद्धा मिद्धिवात्री सिद्धासिद्धस्वकृषिणी ॥ तरः समा समामा च समाराध्या समस्त्वा । समृद्धा समका सस्मा सम्मोहा चपामाना ।। विश्विः समिक्षा स्नेहा मुध्यारस समृत्विता । समीरा संतता सप्ता साध्वी सागुसह विनी ॥ गाइलो संहतिः साख्या सन्त्रवायप्रसाविती । सुवना सुबनाचारा सवाना सामसी गुणा ।। भीवतां श्रीमती भीमा भीगा श्रीवृद्धवासित्री । सालंकता शालुवेशी शालुवेश विवजू री।।

पुभावा मुख्यमहिलमा | गुलभाराध्वा सुलभा गुधिका सुमना शुद्धा शुचिष्यान समाभिता ॥७१॥ सुचनप्रिया । शुचित्री -**गु**चिक्तमंपरा सूची मुलानभिलया सुना सुबुद्धि सन्निवेशना ॥७२॥ स्पर्शाः शिषमीतिकृताध्या । सरकालगामिनी स्तुत्यर्था सर्ववोयहती सम्बन्धकलवाधिनी ॥७३॥ संसर्ग संस्पृता स्तुत्या स्तोकस्तोत्र प्रियञ्करो । सवया सर्वेदास्तुमा सधिया सर्वे वेवता ॥७४॥ सुपरा समनार्विता । पुरालया सुब्दुरता सङ्घोधनिरता सस्या सन्वयातिः सुरज्ञृतिः ॥७१॥ सांस्थायनमुनिस्तुत्वा रांच्यास।हित्यबाधिनी **पुत्रुमप्रस्या भौडीमेमाजंतीकर ॥७६॥** शास्मनी **स्कन्वयुत्रते** रभन्दमाता स्थान्दा स्थान्दवरप्रदा । रकुटार्यफलका रक्षोटा रकुटकथन्ना रकुटविया livell संसारवं सनिवंग्नसमुद्धरख्यण्यता । सानिध्यवाधिनी सन्धिः सुवता सुमनोहरा । ७६॥ सम्यक्समुच्तरी संस्था स्वर्भानुःफलवायिती । शतका संस्थिता सस्मा सुमेरू शुविभूवण् ॥७९॥ चुचिस्मिता सुनेत्रा च सुकोमला सुलक्षमा। गुण्डिप्रया गुण्डमाता गुण्डादण्ड थिराजित ॥व०॥ सांक्यता सक्चरी होबा सत्या भूपालसेविता । सुभेशना पुतुरता च सुगिरा च विस्तरा ॥= १॥ संकुश्तला सन्गुच्या शठववाँवहारिएी । स्मरपश्चीसमाराध्या स्मरादि छलदाविशी । वशी सम्पूज्यवेदातास्यः तमकाविमुनिस्तुता । रवभावभञ्चलापाङ्गी समावनवरप्रदा ।।वर्षाः

हान्द्राम नवनवीता सम्मीलन परायक्षा । सान्तरेदरी स्वर्धभामा भरमामस्वयस्या ॥ होत्रावती शुमाकारा शङ्कररीर्घशारिया । श्रोगा सुभजना सुभू शरमन्थानकारिया ॥ इसवर्ती सराक्त्या शरक्यपोरस्ना शुभावना । जलमा शुलिनी श्रीता सुनम्ना शुक्लवाहना ॥ हुभ् वंतिष्वहरा पद्श्रतुम पढानना । पढाधारस्थिता शस्ना पढेजा पगमुख्रिया ॥ सन्यामधारिकी सैन्या सुधन्या सुध्दुनोचरा । पडङ्गरूपसुरवा सुरापुर नमस्कृता ॥ हर्तवासा सदोत्मचा सुस्तनी सागराम्बरा । सुन्यवस्था च सुरिमित सूर्वमग्रहलमच्यता ॥ बत्यार्वनिलया सत्या सत्यजिद्धापयासिनी । सहस्रद्धयजिद्धाव शेषपर्व्यक्कशायिनी ॥ मुलार्चिमग्रहलगता सन्था पूर्वविभूषगा । सारिका श्यामला स्मेरा स्मेरवक्त्रा शुक्रिया ॥ जुकाष्यवन सम्पन्ना अकी शुक्तवरत्रिया । शुक्राचार्य :श्रियाञ्लोका शोकअन्तापहारिकी ॥ स्वर्गनोत्रसुखद्रारा सर्वकामसुखप्रदा । सप्तद्रीपात्मकाधारा सप्तसागरधारिगी ॥ मर्ववर्गाच पर्वाषा सप्तर्चि सुरसेविता । सद्योजीवा सर्वसम्थ्या सर्वलोकसमाश्रया ॥ मुपारक्ता सीमनस्या सम्भूता सुकृतालया । सर्वा सर्वजगतपूज्या सर्वद्रन्दविनाशिनी ॥ सर्वमन्त्रमयी सुरा । सुधासम्मृष्टसर्वाङ्गी सुधापङ्कवरालिनी ॥ मंसारपान विक्रिया सुनक्षत्रा सौरी केशीस्वलब्कृता । सबदेवसमुत्यका सर्वदेवमयीचरी ॥ संकमा संकमिया । सर्वयौरुपवरकी च सर्वधमधिकारिकी ॥ सप्तकोटीश्वरी विद्या संसारार्म्यवतारिया । श्रीकराठा शितिकराठा च सुधाधाराम्बुवर्षिमी ॥ म्मुनीयां शक्तिरूपा सुशक्तिथ सुधावती । सकलाख्यानसन्तुष्टा सोमस्यागिनमध्यमा ॥ वनम्बता ब्रह्मस्या सुम्त्रा स्त्रस्यिगी । सहस्रादित्यसंकाशा सहस्रनयनोज्यला ॥ अक्षान्ता महस्येशो सर्वविष्नविनाशिनी । सर्ववादित्र इस्ता च सर्वप्रहरणोणता ॥ पुरनी सौरवेदी च सुभाधारा सुधानहा । सर्वनन्धन होक्षेत्री सर्वाभिचारनाशिनी ॥ मर्विदि महावाया सर्ववार्थकमाधिका । सर्वसमामजनी सर्वश्रश्रीवनाञ्चिता। मंदिनवृत्रमुत्यत्तिः सर्वलोक्षेकदीविका । सर्वलोक संखोत्यका सर्वतः संखदाविकी ॥ ममंतुःसान्त इत्या सुमद्रा सर्वयात्रिका । सहस्रशासाफिलनी सर्वरोगनिवृद्दिनी ॥ हेर्न्हे हो शतुहन्त्री अञ्चनामनिकन्दिनी । सकलंहा स्वरूपस्या सोडहं पाष्ट्रसरूपिया।। श्रीशैलपद्गामिनी । श्रीचक्रराजनिलया श्रीमरित्रपुर सुन्द्री॥ भुतानिक्षर्चनत्रीता सुक्रमार प्रियक्कती । सदोन्भवा सदातुष्टा सर्गदा शम्भवेदिनी ॥

स्वस्वा स्वमावमधुरा सदाशियकुडुन्विनी। सञ्चापसच्यमार्गस्या सञ्यसात्री सहाविनी ॥ ११० ॥ सुकौमारी सुमेना च सुरिमका। सर्वोपनिषद् स्तुत्या समीरतनयस्तुता ॥ १११॥ सस्यक्षानानन्द्रह्पासागरस्यः वरायमा । सर्वोपाधि दिनिर्भुक्ता सदाशिव पतिवता ॥ ११२ ॥ सर्वतन्त्रेश्वरी शक्ति सर्वमा सर्वमोहिनी। सर्वाधारा सुप्रतिष्ठा सदसद्भूपपारिणी ॥ ११३॥ सर्ववेदान्त स्विद्याः सत्यानन्द स्वरूपिणी । गुभाचारा समावाग्री सबीदिच्या विराजिता ॥ ११४॥ सर्वादने श्रीतिचत्ता सिन्द्र तिसकाद्भिता । सङ्भदलमध्यस्था सर्नवर्णोपशोभिता ॥ ११५। सर्वायुषधरा युका संस्थिता सर्वतोमुखी । स्वाहा स्वधा सहस्रारा सर्वमृत्युनिवारिक्तो ॥ ११६ । सरलाबापुषसम्पन्ना स्वाधिष्टोम्बुन संस्थिता । समस्त मक्तसुखदो ज्ञाकिन्येवास्वरूपियो । ११०। शिवदूरी शिवाराध्या शिष्टेष्टा शिष्टर्जिता । संहताशेषपाखण्डा सदाचार प्रवर्तिनी ॥ ११६ स्वातमानन्दलयीय्समा ग्रुमाहादनचन्द्रिकाः। सदाशसादिनी साची साचियी साचिवर्जिती ॥ ११६ पडङ्गदेशतायुक्ताः । । वाद्गुर्ययपरिपूजिताः । । । । । । । । । श्रुतिसीमन्त्रसिन्द्री सदाशिवगृहस्थिता ॥ १२° सकतागम सन्दोदा । तुक्तिसम्पुट मौक्तिका । सङ्ख्यदनप्रीता सर्वश्रम निवारिस्ति॥ १२१ सत्पत्राज्ञापिका सत्या सर्वावस्थाविवर्जिता। । संहारिणी सृष्टिक्या सृष्टिकश्री शिवालया ॥ १३१

'सहर्द्धा' वीजरूपातमा 'साँ' वीजनिलपात्मका । 'सहाँ' वीजमुमवांकी सम्मोहन अपिविधा ॥ सहरते 'हो' महाविद्या शुकाचार्य हृद्धिस्थता । सान्त्रमीलकवीजस्था सच्छ्वसप्तृयाधिता ॥ शतरुहा शतानना । श्रीरामहृद्यानन्द दशधानन विवासिनी ॥ सद्धद्रामनिजया स्वींगीजा श्रींगीजा श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं श्रीनिकेतना । स्वरन्यास स्वरूपस्था शुकान्ता शुक्रतर्या ॥ सुक्ष् रनिभासातमा शुमस्थल निवासिनी । संध्यागरूपिणी संध्या संहिता संहितासहना ॥ संनासमेदोस्थिगता सुक्रशा सुहृदिस्थिता । फिसुलो च भागीफानकी सबद्वास्थिका ॥ सक्री हंस स्वरूपस्था स क्ली विहगरूपियाी । सुवर्णा वर्ण सर्वाक्स्नी स्वीरूपा कानुकालिनी ॥ सक्रमान्यासवैग्री च स्वामिनी शिवपोषिग्री । व्येतातपत्रधरिग्री सिद्धार्थी शीलध्यमा ॥ सत्यार्थिनी सन्ध्यामा च राची सिही संहंकरी । संकोचार्थ अदर्शी च सहदक्ष्युविहारियी ॥ क्षिपिविष्ट प्रियाइलोका सुकामा सञ्जनाश्रया । ध्रुपंजयरपुरुश स्पारलीरूपधारिकी ॥ शिवशक्तिसमाश्लिष्टा स्फुरव्योमान्तरस्थिता । सर्वरोगहराख्या व सौरमा चौर संस्तुता ॥ सम्प्रतासभ्यस्था सर्वसम्पुट मालिका । सर्वाशापुरणीरलाच्या रलींबीजा रलींपराशिखा ॥ शिलास्यरूपतरण्ये शुक्लाङ्गी शुक्लमापिणी । सदा शाहनिवामी च सावर्णातनयस्तुता ॥ मुरण्या सुरचारूढा सुरच ज्ञानवाचिनी । स्त्रीबीजवासिनी श्रांता श्रान्तसन्तापहारिकी ॥ रमहानकाली हा गुह्मा रमशानागार भूपला । शास्त्रविया शस्त्रिकला सास्त्रा संस्वयसम्बद्धाः। सिलकुर्वनिवासा च सिलियोड्ठी त्रियंकरी ! सुभभोगाद्यसन्तुव्टा सर्वज्ञानासमानिनी ॥ श्वेतद्वीपनिवासा च शुश्रजाम्यूनवस्थिता । समास्तिषातुरातमा च सविधुले जरूपियाी ॥ साकारनित्रया साका साकेतपुरवासिनी । सप्तव्याहृतिसंयुक्ता स्नुषा सुव्यक्तमालिका ॥ सम्बालका साम्बक्तवा सुनागमस्मिन्नवरमा । सुजटा सोकला सोरका सर्वमालविच्नवमा ॥ संहार भरवस्तुत्वा स्मातंहोमप्रियंकरी । सर्वित्रिया समृद्धा सा सद्देवभिषजिप्रया ॥ सौराष्ट्रदेशमध्यस्था सोमनाधेशवराञ्च्या । स्वयवरोत्सवत्रोता सौमित्रित्रियभाविकी ।। भिनितसङ्गमसन्तुष्टा गरत्ताराङ्गग्रास्थिता । सन्ताक्ष्यरथसंस्था च व्येतकुञ्जरवाहिनी ॥ भीभद्धे मनती स्वासः मुकुमारी सुकन्यका । श्रीसागानन्दयमना श्रीमज्जनकनन्दिनी ॥ सदाइ तस्वक्षा च मुक्सा च सुकुण्डला । संभावकारिएी स्वासा चातुरी शास्तरोहिम्हे ॥ तरावती सरोग्नावा सरावस निकम्बिनी । सहस्रातनधाती च सपट्टिसकरायुधा ॥ रेंकों कालि स्वक्यस्था सल्हों नेवस्वकविग्री। सम्ली पञ्चात्त्रक्यस्था सध्वं पञ्चस्वकविग्री।

पश्चमुहाधिमता सच्छीत्रश्च वधुत्रता । सनातन प्रेतसंस्था स पश्चामृत भिद्यामी सकौतिक गृहान्तका सवामा च सदिचा। स पञ्चवाम् व्यथिता सदादेन प्रसादिनी सवता च गुगन्या च सतिहत्कान्ति सिवामा । सर्वकालमयी रूपा सिवम्बा शील लंबना रोन्द्राषुध समुस्कराठा मुरान्वार्यवरप्रदा । सुगन्धवरुकी कान्तस्था समुद्या सान्द्रमालिका सम्बन्धीति स्वरूपस्था राजुहोगित भाषिकी । शुनिसेफः ऋषिस्तुत्या श्वेतवर्गा समुज्यला ॥ भीकृष्णाञ्च निवासिनी शुगगा शुभमञ्जला । स्नानोदकत्रिया स्नाता समुद्रा सिन्धुवासिनी ॥ सच्छित्य योधिनी शिष्या शतजन्मा शताकृतिः । सद्दनाश्रित पादाञ्जा सदानन्दविहासिको ॥ सर्वतीर्थाञ्चगाहिनी संस्रोमन सञ्चक्रका । श्री ही की भैरवीसाद्या श्री की ह्री हर् समन्तिता॥ सम्रत्यका शङ्करीत्पत्तिकारियाी । शत्रुनाशा शत्रुदाता भी हीं सी ग्रुस्जमेरती शुं शुं शक्तिसहरूपिएरि । शालाची शालरूपा च शालपानपरायगा । ग्रं ग्रं म्रं मतिस्वस्पिगी सकाराच्यस्पिता । शीघरूपा च ग्रीधा च शीघतत्त्वविभोहिनी ॥ शूकरेडमा शूकराकृतिलाल ा । शत्रीरशनसन्तुच्टा शैलस्नेह शमीपुजारतशीता शान्तिस्तोत्र परायक्ती । शववाहनसन्तुष्टा शवरूपा शवेश्वरी ॥ श्रीमद्रूपा च सद्राला शेषचण्डपरायस्या । श्रीगुरमा श्रीसरन्याया सारदानन्दकारिस्मे॥ श्रीपार्वेति शक्तिभेषा श्रीकमला च मुगर्भिएति । श्रीतोडमसम दुःखध्नी शिवमुद्रा प्रदर्शिनी ॥ सुकाली मुतारा च सुधिका व सुमुन्दरी । श्रीमद्मुवनेश्वरी च श्री श्रीमाया च सुकि द्विवा॥ थीवगला थोसूबा भीवहालक्ष्मी च शालिका । स्वकीयाचेनसन्तुष्टा शिवावलिप्रियारिमका ॥ सुरम्या चित्रक्टस्था सुदर्शनसहाधिनो । सभयाऽभीष्ट वरवा सकोधा सभयद्वरी॥ मुधीवादि हरिस्तुत्था सुब्दुग्रीवा सुसागरा । सन्तवाताःलचरस्या सप्तालप्रमेदिनी । सुरक्तम (समूदाङ्की युम्भासुरिक्जिन्तिनी । युद्धस्फटिकसंकाशा सुताम्बूलधरिया । सुमर्वज्ञा सर्वशिवत सर्वेशवर्धप्रवाधिको । सर्वश्रीशाङ्करी सर्वोन्सादिनी च महादुशा सां सो सर्वातपूरको भैं भैं भी बक्तस्वाधिनी । सापानुप्रहसामध्या स्वचकायुष र दियों ॥ सगरात्मजसन्दरमा गुक्रकत्रीं च सन्तमी । संग्रतसरिया घटती सत्यगृहस्यकृषिशी॥ गुतस्य सरितस्नाता सरितानांशिरोन्निः। सहजानन्दलहरी द्वभोजन प्रोतिश्विक्ता बद्दसस्वादनप्रिया । सौधात्मिका सौधक्ष्मा सुसीधा सेन्धवप्रिया । शोधना शोधकृत् सौधा शोधनप्रियमानसा । सुरहिटश्च सूलज्जा च मुखुनासा समीसिका ॥

पुणद्वदर्गेकी प्र्यंक्ती प्रविक्ती प्रविक्तती । सर्वप्रयोगस्याका सर्वस्तव्यनकारिकी ॥१७५॥ वृष्याक्रम मन्तुष्टा मुक्त्येग शुक्तिया । पुदामाद्वःस्रयंहत्री सुमद्राभोकनाशिनी ॥१७६॥ वृष्याक्रम मह्येविभयद्वक्तरी । शक्ति कर्याक्षादात्री च शक्तवेरी विभाशिनी ॥१७७॥ व्यक्षितिक्षावृद्धा सहित्रकाविभयद्वा । श्री क्ली विभाविन्ये शस्तुमोग परायक्षा ।। क्ष्यूक्तिन्युद्धा शाक्तमार्थविनाशिनो । स्रवृष्यादनकार्यस्या श्रवृमोहनकारिको ॥१७६॥ वृष्यादनवनत्त्रयः सारात्मारवरास्मृता । सारस्यतमुनिक्तुच्या साधिताविक्तव वभवा ॥१००॥ वृष्यादनवनत्त्रयः सारात्मारवरास्मृता । सारस्यतमुनिक्तुच्या साधिताविक्तव वभवा ॥१००॥ वृष्यादनवनत्त्रयः सारात्मारवरास्मृता । सर्वप्रतान्तिनरता श्लोकत्त्यार्थद्विनीः ॥१००॥ वृष्याविक्तविक्ति च सुरोधनयथोषता । सर्वभ्रवान्तिनरता श्लोकत्त्यार्थद्विनीः ॥१००॥ व्यक्तविक्रविक्ति च सुरोधनयथोषता । सर्वभ्रवपतिस्त्तुस्या साल्विकी सर्वरिक्ति ॥१००॥ व्यक्तविक्तविक्ति च सर्वरिक्तविक्ति । सर्वभ्रवपतिस्त्तुस्या साल्विकी सर्वरिक्ति ॥१००॥ व्यक्तविक्तविक्ति च सर्वरिक्तविक्ति । सर्वभ्रवपतिस्त्तुस्या साल्विकी सर्वरिक्ति ॥१००॥ व्यक्तविक्तविक्ति च सर्वरिक्तविक्ति । सर्वभ्रवपतिस्त्तिक्ति सर्वरिक्ति । सर्वरिक्तविक्तविक्ति विक्तविक्ति । सर्वपतिस्त्वत्या साल्विकी सर्वरिक्ति ॥१००॥ विक्तविक्तविक्ति च सर्वरिक्तविक्तविक्ति । सर्विक्तविक्तविक्तविक्तविक्ति सर्वरिक्ति । सर्वरिक्तविक्तविक्तविक्ति ।

## अधफत श्रुतिः—

1

द्ति ते किथतं वेवि ! दिव्यनामसहस्रकम् । सीतादेव्याः परं मुद्यं महापातकनाशनम् ॥१८८॥ अश्म्यां च चतुर्वश्यां संकान्तौ पक्रकेदिने । अमायां च तथा रात्रो नवम्यां च मुमेदिने ॥१८८॥ पूजाकाले व्यदीयाते सन्ध्यपोरुभयोरिप । यः पठेत् पाठपेत् वाि पृत्तोति आवयेदिप ॥१८६॥ तभ्ते गाम्यदर्यं सः यः पठेत् साधकोत्तमः । सर्वपायविनिर्मुक्तः सयाति परमांगतिम् ॥१८८॥ अद्यादश्वद्या वािष यः कथिन्मानशः पठेत् । दुर्गार्ति वस्ते धोरां सयाति विष्णुपन्दिरम् ॥१८८॥ वन्यवा वा काक्वन्थ्या वा मृत्यस्ता च याङ्गना । स्तुत्वा स्वोविनिर्मं पुत्रास्तानने विर्धाविनः ॥ यं विन्तयते कामी एठेतस्तोत्रममुत्तमम् । कीता वरम्यादेन तं तं प्राप्तोति मानयः ॥१६२॥ वश्चेपचारं नेवेद्यं विविधिवद्वप्रोत्तिम् । ध्य दीर्पमहादे ते पूजियस्ता मनोरमे ॥१६२॥ वश्चेपचारं नेवेद्यं विविधिवद्वप्रयोगितः । ध्य दीर्पमहादे ते पूजियस्ता मनोरमे ॥१६२॥ वश्चेपचारं विविधिवद्वप्रभाविक् प्राप्ताने स्थायः ॥१६३॥ वश्चेपचार्यं विविद्यस्तिविक् प्राप्ताने । सर्वविद्यावतां अवेद्यो धनेन च धनाधियः ॥१६२॥ वर्षवंक्रस्तिविक् प्राप्ताने स्थाविद्यस्तिविक् स्थाविक् स्थाविक् स्थाविक् स्थाविक स्था

दे देवि ! यह श्राकोता देशी का गुष्त तथा महापातक नव्ट करने बाला सहस्रमाम लोग मैं ने तुमले कहा है, अष्टमी को-चहुदंशी-संक्रान्ति-मक्तववार-अमायस को तथा नवसी के ग्रंभ दिन में राजि में पविश्व होकर पाठ करे अथवा व्यतीपात के दिन तथा प्रात: काय संस्थाधान के जो पढ़ता है-पड़ाता है-सुनता है-सुनाता है, यह श्रेष्ठ साथक सभी पायों से मुक्त होकर परमणित को प्राप्त करता है। श्रद्धा से अश्रद्धा से को कोई मानव इसका पाठ करे तो वह पोर हुनीत ते अरबर प्रभु के वंकुण्ठ में जाता है वन्नथा ( निसको कनी सन्तान होया हो ) बाक बन्धा ( जिसके एकवार सन्तान होकर फिर वन्ध्या हो गई हो ) स्तक्ष्म न हुना हो ) बाक बन्धा ( जिसके सन्तान मर जाते हों ) ऐसी स्त्रियां इस रतीय का पश्चित्र श्रीवेच्छान वित्र के दुन हे अवस्य करके उसकी प्रसंसा करे अध्या स्वयं पाठ करे तो बसकी विश्वीयी पुत्र मास्त होता है। जिस जिस वस्तु की कामना से इस सर्वीतम स्वीत्र का पाठ किया जाय वह सन वस्तु से जिस जिस वस्तु की कामना से इस सर्वीतम स्वीत्र का पाठ किया जाय वह सन वस्तु सन्त्र यो सीता जी की प्रसंप्रता से प्राय्व करता है। पर्व्योपकार पूत्रत करके श्रीसीता हैवी को बहुत सुन्दर सून नैदेध भोग धरावे। धूप-रीय-पंक्यात्र समर्पर्या श्रीफल वित्र ब्यादि मनोहर परावों से महादेशों की पूजा कर उसके यहच्च मूळ मन्त्र का सुधी मक्त साथक एक जात जप करे। अनस्य निद्धा से पक्क बासन से विद्युद्ध भावना से जो यह अनुष्ठान करे तो बहुपक्त के समान बखवान होता है, धनवानों में खबेर दुल्य हो जाता है। सेस संकटों को पार कर सर्व निद्धियों से सम्यत हो जाता है, धनवानों में खबेर दुल्य हो जाता है। सेस संकटों को पार कर सर्व निद्धियों से सम्यत हो जाता है, धनवानों में खबेर दुल्य हो जाता है। सेस सौन्दर्य में कामदेव के समान हो बाता है। ( श्रीक (४४ से १६५ )

महेगवतयोगीन्द्रः भूतैःसह प्रपूजितः । कामनुत्यस्वकयोऽसी सर्वाकर्षण्कारकः ॥
सूर्येन्द्रजलवायूनां स्तम्भको राजवत्त्रभः । वशस्त्री सत्किविधीमान् समन्त्री कोकिलस्वरः ॥
बहुपुत्रो जगस्त्वामां नरेशोधार्मिकः सुखी । मार्कश्केय इवायुवमान् जनापिलतविज्ञतः ॥
सथ्योवनयुक्तः स्वादिववदंगहस्रभःक् । वह कि कचनात्तस्य ५ठेत्स्सवमनुत्ततम् ॥
न किच्चित् बुलीमेलोके यद्वद्मनसि वर्तते । सत्सर्वे स्वत्यकालेन भविष्यति वदानने ॥
सुरायानं बहुमहत्वा स्त्रेयं गुवंजुन्नागमः । सर्वमानुत्तरस्येव स्तवस्यास्वप्रसादतः ॥
स्तवेनानेनसंस्तुत्वा सायकः किन्नसाययेत् । सूलमक्दोत्तर अस्था पठेन्नामसहस्रकम् ॥

वह महेश्वर के तमान भूतेश्वरों से पूजित वोगीन्द्र पद प्राप्त करता है, काम के समान स्वक्रवाय होकर तभी का जाईवरा कर सकता है, सूर्य-जल तथा पवन के जानिष्ट प्रभान को रोक तकता है, वह वक्तवी-सरक्षि-बुद्धिमान-मन्त्रज्ञ-विचारक-निर्णायक-नरेश-धामिक-मूर्व प्रजा का स्वामी-तथा पुत्र-पीत्रवान होता है, बुद्धावस्था तथा रोग रहित स्वश्च गहता है, मार्क रहेव के समान शीर्य होता है, हजारों वर्ष नव बीवन सम्पन्न रह सकता है, बहुत क्या कर्ष वो इस वर्गता करता है वसको संसार में कुछ भी दुर्जन नहीं है। हे सुन्द वर्ग के प्रमान अपने वार्यतो ! वह जो मन में इच्छा करता है वह शीम ही बनावास प्राप्त करता है। ब्रह्मास्था-पुरापान-शुरुपतो शमन जैसे महापानों से वह इस स्तोत्र वाट की कृता से श्रीम हा बाता है। इस स्तोत्र के साधन से साधक क्या सिद्धि प्राप्त नहीं करता है। वह वर्ग का अपने से साधन से साधक क्या सिद्धि प्राप्त नहीं करता है। वह वर्ग का अपने से साधक क्या सिद्धि प्राप्त नहीं करता है। वह वर्ग का अपने से साधन से साधक क्या सिद्धि प्राप्त नहीं करता है। वह वर्ग का अपने से साधक क्या सिद्धि प्राप्त नहीं करता है। वह वर्ग का अपने से साधक क्या सिद्धि प्राप्त नहीं करता है। वह वर्ग का अपने से स्वस्था करता चारियो। (श्लोक १९९ से २०व)

Control of the state of the sta

द्श्रींनं च भवेदाशु विवयन्थर्यसेवितः । येन केन प्रकारमा सीताविकः मयन्वितः ॥२०३॥
स्वभ्यवेदिवानम् कामान् राजानगिपमीह्येत् । परिनन्दा परद्रोह परवाद परापगः ॥२०४॥
स्वाद परान्त्राय अण्टाय च दुरास्थने । न देयं सिक्तिहीनाय शिवहीहक्ताय च ॥२०४॥
तामाक्ति विहीनाय परदारस्ताय च । जवप्जाविहीनाय दिल स्री निन्द्वार च ॥२०४॥
व स्ववंदर्शयेद्दिव्यं दर्शनाविद्यवहाभवेत् । कृतिनाय सुशीलाय रामगक्ति पराय च ॥२०७॥
वैद्यावाय विशुद्धाय भवतेर्यक्ताय मन्त्रियो । देयं सहस्वनावदमध्यप्रकलं क्रमेष् ॥२००॥
देविविदितं वत्—तत् तस्यांशं सच्चयेश्वरः । दिव्यदेहथरोभूत्या देव्याः परव्येत्रसंगवेत् ॥२००॥
देविविनिद्वेदं देव्ये द्वय्वास्त्रस्यायम् मन्त्रस्य । स्कपानोधतायदां सामास्थित्रमंगोद्यताः ॥२१०॥
तस्यै निवेदितं देव्ये द्वय्वा स्तुत्या च मानवम् । स्कपानोधतायदां सामास्थित्रमंगोद्यताः ॥२१०॥
वस्यै निवेदितं देव्ये द्वय्वा स्तुत्या च मानवम् । स्विधितं विधिन्नैः ।

गोरोचनालक्षुत कुंकुमार्क्त कर्पूर सिन्द्र मदद्रवेन ॥२१२॥ न तत्र चौरस्य भयं न शत्रुतो न वाशने विक्ष न व्याधिमीतिः ।

> उत्यातवार्तरिप नात्रसङ्का लदमी स्वयं तत्र वसेदलोला ॥२१३॥ इति बीकायामने उमामदेश्यरसंवारे सकरादि बीधोतासहस्रनामस्योत्रम्

> > ॥ सम्पूर्णम् ॥

 पालन करने वाला सर्वं ह्याचि से मुक्त होकर सवा सुबी रहता है। जिसके घर में कुर्व रम्य अवारी में लिखा हुजा यह स्तोत्र रहता है तथा विधि जानने वाला भक्तजन केशर-कर्व्य व्यवस्था काला कि काला है। वसके घर में कभी चोर क्ष व्यवस्था नहीं होता है, व कोई मुद्र का स्य रहता है, विज्ञाती (वक्षपात ) अम्न कालह धार वपद्रवों का भय नहीं रहता है। वलका घर सर्वे पद्रव में रहित शंका भय सुक्त स्थयं अविक्षं जी का अविवक्त निवास स्थान का जाता है। (क्राके २०३ से २१३)

''यह श्रीरुद्रयामल तन्त्र का उमा महेश्वर संवादात्मक सकारादि ''श्रीसीता सहस्राः स्तोत्र'' सम्पूर्ण हुन्ना।